MUNI INTERNATIONAL SCHOOL

एकलव्य +++

MUNI RESEARCH & DEVELOPMENT DIVISION

क्या जानवरों से हमे इतना खतरा था कि हमे बम बनाने पड़े ?

क्या बम के बाद परमाणु बम का निर्माण का कारण जानवरों, प्राकृतिक आपदाओं और अज्ञात शक्तियों से डर हैं या

हमारी शिक्षा की विफलता का परिणाम हैं ???

कब तक

कब तक कोई देश अपने को अमीर रखने के लिए अन्य को गरीब रखने की नियति बनाए रखेगा ?

क्या दो देशों की मुद्राओं (CURRENCY) के मूल्य में असमानता दूसरे देशों के संसाधनों, वस्तुओ, प्रकृति आदि का शोषण नहीं है?

SCHOOLING

The truth of schooling is mind control, you cannot deny that. No matter how much pride you take in your work, the truth is that you have been played. But maybe if you read this, you can do your part to reduce the pressure on the thoughts on Johan Taylor Gatto, who wrote the book

“The Underground History of American Education.”

KIND OF PEOPLE

- **1st kind people** – use same weapon in the struggle of life and end their life.
- **2nd kind of people** - who often change weapons and sometimes even tactics if they do not get the desired success.
- **3rd kind of people** - by observing & analysing others, decide which weapon or strategy to use.

Now it is a matter of understanding who has more time to get success.

Is this the modernization ??

वर्तमान में लोग चिंता में है कि

- कोरोना के कारण क्या होगा,
- कोरोना के बाद क्या होगा,
- कोरोना से क्या होगा

परन्तु मुझे ऐसा लगता है की **कोरोना के कारण/में/से कुछ नहीं होगा** जो होगा अपने सामर्थ्य के कारण होगा।

REASON OF FAILURE

कारण ये है की हमने व्यक्ति को तैयार नहीं किया बल्कि कल्चर के अनुयायी बनाये है.

हमारी शिक्षा ने साढ़े सात सौ करोड़ HUMAN BEING की जगह दो - तीन हजार CULTURES, डेढ़-दौ सौ देश बना दिए।

काश प्रत्येक व्यक्ति तैयार हुआ होता तो इस कोरोना को साढ़े सात सौ करोड़ तक पहुंचने में बहुत वक्त लग गया होता।

प्रतिभा और व्यक्तित्व के असंतुलन में घरेलू परेशानियाँ, अवसाद, झगडे आदि भी एक कारण है।

SECRET OF BEING GENIUS

कोई भी आदमी ज्ञानी क्यों होता है और कैसे बनता है – जब ज्ञान, विज्ञान, विवेक अलाइन होते है तब क्रिएशन वास्तविकता का रूप लेता है। स्वयं की पीड़ा के द्वारा परिस्थितियों के निगरानी के साथ समग्रता की पूर्णता के लिए होता हैं.

Eklavya System

1. Find the necessities and importance of thought/creation. Self-made questions based on pros and cons.
2. Treat yourself as a subject (which is to be find) and find the all possible extension in future. Don't use your memory and impression (Aawesh).
3. Discuss with yourself on subject's own situation, content and idea.
4. Questioning to the topic/thought until or unless you don't feel satisfied yourself.

   क्या - रूप, गुण, स्वभाव, धर्म

   दृष्टिगोचर ज्ञानगोचर

   क्यों - ईकाई/विषय/क्रिया की उपयोगिता और पूरकता

   कैसे - ईकाई/विषय की संरचना कैसे हुई या यह कैसे काम करता है।

   कितना - व्यवस्था में ईकाई/विषय/क्रिया भागीदारी की मात्रा

   कब - ईकाई/विषय/क्रिया का समय, काल या परिस्थिति

   कहाँ - देश या स्थान
5. Debate and Exchange UPLC (Understand, Problem, Learn and Complete information) of creation in NIRIKSHAN, PRIKSHAN, and SARVEKSHAN.
6. Center Work: 1. Research & Creativity 2. Construction, 3.Role Play (Political, Social, Economical) 4. Math & Science 5. ABC Language(W\M)

जिज्ञासु मन के विचारों को समयानुकूल और युगानुकूल व्यवहारिक रूप प्रदान करना ही एकलव्यता है।

	जीवन में इसका स्वरूप	किस प्रश्न का उत्तर है?	(उत्तर) अध्ययन में इसका स्वरूप
ज्ञान	स्वीकृति स्वरूप में	अस्तित्व का मूल स्वरूप क्या है?	सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान
			जीवन ज्ञान
			मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान
विवेक	निश्चयन स्वरूप में	मेरे जीने के लिए क्या "सही" है और क्या "गलत"?	जीवन का अमरत्व
			शरीर का नश्वरत्व
			व्यवहार के नियम
विज्ञान	कार्य व्यवहार स्वरूप में	मेरे जीने की शैली का स्वरूप क्या है?	कालवादी ज्ञान
			क्रियावादी ज्ञान
			निर्णय वादी ज्ञान

डायनामाइट के अविष्कार में विवेक का इस्तेमाल कम किया गया होगा क्योंकि विनाश से स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती।

मानव के कार्यक्रम

मानव जीवन में चार ही कार्य थे -

- जानना
- मानना
- पहचानना
- निर्वाह करना

अंतिम तीन कार्यों पर बड़ा जोर दिया परन्तु पहला कार्य करने में चूक हो गई।

यही कार्य करने को रह गया है।

आज एकलव्य +++ की जरुरत है क्योंकि एकलव्य का योगदान कहानी/ बेचारगी भर रह गया, गुरु द्रोणाचार्य कि व्यक्तिगत इच्छाओं और साजिश का शिकार हो गया.

और विडंबना है कि आज एक शिकारी (गुरु द्रोणाचार्य) के नाम का अवार्ड पाने की होड़ लगी है।

Dronacharya's act was shameful, says SC

Dhananjay Mahapatra | TNN | Jan 6, 2011, 03:46 IST

A- A+

Ads by Google
Report this ad Why this ad?

TOI

NEW DELHI: Dronacharya, Guru of Pandavas and Kauravas in the epic Mahabharata, came in for some harsh contemporary scrutiny in the Supreme Court, with the apex court terming as shameful his action in seeking the right thumb of tribal Eklavya to clear the way for his favourite, Arjun, to emerge as the best archer of the times.

"This was a shameful act on the part of Dronacharya. He had not even taught Eklavya, so what right had he to demand 'guru dakshina', and that too of the right thumb of Eklavya so that the latter may not become a better archer that his favourite pupil Arjun?", asked a bench comprising Justices Markandey Katju and Gyan Sudha Mishra. For them, the episode in the Adiparva section of the immortal epic constituted the "well well-known example of the injustice" to tribals.

हमारा एकलव्य न शिकार और न ही शिकारी होगा, न आंख झुकाकर न उठाकर बल्कि आँख मिलाकर वह

स्वयं में समाधानित होकर,
परिवार में समृद्धि,
समाज में अभय और
प्रकृति में संतुलन
को प्रमाणित करेगा।

मैं भाव के द्वारा पुरे विश्व ही नहीं बल्कि ब्रह्माण्ड की तृप्ति कर सकता हूँ परन्तु वस्तु/सामान में **एक व्यक्ति** भी तृप्ति नहीं कर सकता

आओ इस भाव को **बे भाव** न होने दे

MUNI RESEARCH & DEVELOPMENT DIVISION